# सिंह और सियार

वर्षो पहले हिमालय की किसी कन्दरा मे एक बलिष्ठ शेर रहा करता था। एक दिन वह एक भैंसे का शिकार और भक्षण कर अपनी गुफा को लौट रहा था। तभी रास्ते मे उसे एक मरियल-सा सियार मिला जिसने उसे लेटकर दण्डवत् प्रणाम किया।

जब शेर ने उससे ऐसा करने का कारण पूछा तो उसने कहा, “सरकार मैं आपका सेवक बनना चाहता हूँ। कुपया मुझे आप अपनी शरण मे ले ले। मैं आपकी सेवा करुँगा और आपके द्वारा छोडे गये शिकार से अपना गुजर-बसर कर लूंगा।' शेर ने उसकी बात मान ली और उसे मित्रवत अपनी शरण मे रखा।

कुछ ही दिनो मे शेर द्वारा छोडे गये शिकार को खा-खा कर वह सियार बहुत मोटा हो गया।

प्रतिदिन सिंह के पराक्रम को देख-देख उसने भी स्वयं को सिंह का प्रतिरुप मान लिया। एक दिन उसने सिंह से कहा, 'अरे सिंह ! मैं भी अब तुम्हारी तरह शक्तिशाली हो गया हूँ। आज मैं एक हाथी का शिकार करुंगा और उसका भक्षण करुंगा और उसके बचे-खुचे माँस को तुम्हारे लिए छोड दूँगा।'

चूँकि सिंह उस सियार को मित्रवत् देखता था, इसलिए उसने उसकी बातों का बुरा न मान उसे ऐसा करने से रोका।

भ्रम-जाल मे फँसा वह दम्भी सियार सिंह के परामर्श को अस्वीकार करता हुआ पहाड की चोटी पर जा खडा हुआ। वहाँ से उसने चारो ओर नज़रे दौडाई तो पहाडा के नीचे हाथियो के एक छोटे से समूह को देखा। फिर सिंह-नाद की तरह तीन बार सियार की आवाजे लगा कर एक बडे हाथी के ऊपर कूद पडा। किन्तु हाथी के सिर के ऊपर न गिर वह उसके पैरो पर जा गिरा। और हाथी अपनी मस्तानी चाल से अपना अगला पैर उसके सिर के ऊपर रख आगे बढ गया। क्षण भर मे सियार का सिर चकनाचूर हो गया और उसके प्राण पखेरु उड गये।

पहाड के ऊपर से सियार की सारी हरकतें देखता हुआ सिंह ने तब यह गाथा कही -

'होते है जो मूर्ख और घमण्डी, होती है उनकी ऐसी ही गति।'

सीख: घमंड और मूर्खता का साथ बहुत गहरा होता है, इसलिए कभी भी ज़िंदगी मे किसी भी समय घमण्ड नही करना चाहिए।

# सिंह और सियार

बहुत पहले हिमालय की किसी कन्दरा में एक बलिष्ठ शेर रहा करता था। एक दिन वह एक भैंसे का शिकार और भक्षण कर अपनी गुफा को लौट रहा था। तभी रास्ते में उसे एक मरियल-सा सियार मिला जिसने उसे लेटकर दण्डवत प्रणाम किया।
जब शेर ने उससे ऐसा करने का कारण पूछा तो उसने कहा, "सरकार मैं आपका सेवक बनना चाहता हूँ। कृपया मुझे आप अपनी शरण में ले लें। मैं आपकी सेवा करूँगा और आपके द्वारा छोड़े गये शिकार से अपना गुजर-बसर कर लूँगा।' शेर ने उसकी बात मान ली और उसे मित्रवत अपनी शरण में रखा।
कुछ ही दिनों में शेर द्वारा छोड़े गये शिकार को खा-खा कर वह सियार बहुत मोटा हो गया।
प्रतिदिन सिंह के पराक्रम को देख-देख उसने भी स्वयं को सिंह का प्रतिरूप मान लिया। एक दिन उसने सिंह से कहा, 'अरे सिंह! मैं भी अब तुम्हारी तरह शक्तिशाली हो गया हूँ। अतः मैं एक हाथी का शिकार करूँगा और उसका भक्षण करूँगा और उसके बचे-खुचे मांस को तुम्हारे लिए छोड़ दूँगा।'
चूँकि सिंह उस सियार को मित्रवत् देखता था, इसलिए उसने उसकी बात को बुरा न मान उसे ऐसा करने से रोका।
कुछ-एक दिनों में वह दम्भी सियार सिंह के पराक्रम को अंगीकार करता हुआ पहाड़ की चोटी पर जा पहुँचा। वहाँ से उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई तो पहाड़ के नीचे हाथियों के एक छोटे से समूह को देखा। फिर सिंह-नाद की तरह तीन बार सियार की आवाज़ लगा कर एक बड़े हाथी के ऊपर कूद पड़ा। किन्तु हाथी के सिर के ऊपर न गिर वह उसके पैरों पर जा गिरा। और हाथी अपनी मस्तानी चाल में अपना अगला पैर उसके सिर के ऊपर रख आगे बढ़ गया। क्षण भर में सियार का सिर चकनाचूर हो गया और उसके प्राण पखेरू उड़ गये।
पहाड़ के ऊपर से सियार की सारी हरकतें देखता हुआ सिंह ने तब यह गाथा कही – 'होते हैं मूर्ख और घमण्डी, होती है उनकी ऐसी ही गति।'

सीख: घमंड और मूर्खता का साथ बहुत गहरा होता है, इसलिए कभी भी ज़िन्दगी में किसी भी समय घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अनुवाद - बिन्दु कौल जला